चंद मुलाकातें केदार जी के साथ

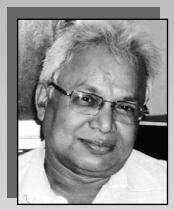

शैलेंद्र शांत

द्वारा, आरती श्रीवास्तव,
जीवनदीप, तीसरी मंजिल,
36, सब्जी पल्ली,
देशप्रियनगर, बेलघरिया,
कोलकाता-700056
मो. 9903146990

अरसे तक हिंदी के समकालीन काव्य जगत में ध्रुवतारे की तरह चमकते रहे केदारनाथ सिंह सबके लिए उपलब्ध कवि रहे। सहज, सरल और आत्मीय। नए कवियों, कवयित्रियों, पाठकों और पत्रकारों के भी। सत्ता के केंद्रों, संस्थाओं को भी उनसे बहुत शिकायत नहीं रही। जाहिर है, ऐसे लोकप्रिय कवि का सानिध्य बहुतों को मिलता रहा है। चंद मुलाकातें और उनकी यादें मेरे जेहन में भी मौजूद है।

आखिरी मुलाकात !

किसे पता था कि उनसे फिर कभी मिलना सम्भव नहीं हो पायेगा! उस दिन यानी 17 जून 2017 को उनका सान्निध्य अचानक ही मिल गया था। यानी पहले से तय नहीं थी मुलाकात। भारतीय भाषा परिषद की ओर से काव्यपाठ के लिये आमंत्रित था। इसी मकसद से घर से निकला था। पर ट्रैफिक समस्या के कारण बहुत देरी हो गई, सो कविता सुनने -सुनाने का मौका तो नहीं मिल पाया, क्योंकि वह सम्पन्न हो चुका था। लेकिन प्रिय कवि केदारनाथ सिंह जी का सान्निध्य जरूर मिल गया। वे पहले की तरह अपनेपन का अहसास दिलाते हुए मिले थे। थैले में आधी हकीकत की प्रतियां भी ले गया था। वागर्थ के लिये दो प्रतियां और कवि विमलेश त्रिपाठी को एक प्रति दी ही थी कि केदार जी मुझसे मुखातिब हुए थे - हमरा के ना देब का हो...

कविवर के जनपद से मैं भी हूँ , यह जानने के बाद से वे बीच-बीच में भोजपुरी में बात कर लेते थे। मैं भी। खैर, शंभुनाथ जी, निदेशक भारतीय भाषा परिषद व सम्पादक वागर्थ के चेम्बर से एक प्रति लेकर उन्हें भेंट की। लघु उपन्यास आधी हकीकत की प्रति भेंट कर अच्छा लगा। कविवर ने उसके पन्ने पलटते हुए पूछा था - उपन्यासो लिखे ल...

जी, एगो लिखे के कोशिश कइले बानी...

केदार जी, मेरी तरफ से नजर हटाकर किताब के पन्ने पलटने लगे थे...उस दिन परिषद से निकलते वक्त उन्हें कविता की किताब आने की सूचना दी थी तो उन्होंने कहा था हमके जरूर दिह...

जी , जी , जरूर...,पर वह मौका मिल नहीं पाया।

केदार जी से कोलकाता में ही मिलना हो पाया था।

इस मुलाकात से पहले हावड़ा में। एक प्रेक्षागृह में। वहां युवा कवि विमलेश त्रिपाठी के नये संग्रह का लोकार्पण और उस पर चर्चा थी और उसके बाद नाट्य मंचन। लोकार्पण-चर्चा वाले सत्र के बाद केदार जी शिवपुर अपनी बहन के घर (जहां कोलकाता आने पर ठहरते थे) के लिये सभागार से बाहर निकले तो मुक्तांचल की सम्पादक मीरा सिन्हा की कार में उन्हें बैठाया गया। मैं भी इसी में सवार था। मीरा जी के घर पहली बार जाने के इरादे से। ताकि बाद में उनसे मिलने जाना हो तो घर तलाशने मे परेशानी नहीं हो।

खैर, कार शिवपुर की ओर चली तो बातचीत भी जारी।

केदार जी आगे वाली सीट पर थे और हम पीछे वाली पर। चालक को रास्ता-गली बताने में सहूलियत होगी। यही कहकर वे आगे बैठे थे। वैसे, कुछ महीने पहले बहन वाले ठिकाने पर मैं गया था पूछते पाछते। वह शाम ढलने का वक्त था। लेकिन उजाले के साथ। उस दिन रात का आगमन हो चुका था। यानी मैं मदद कर नहीं पाता।

ट्रैफिक जबरदस्त। कार फ्लाईओवर पर थी। चारों तरफ रोशनी जगमग। सामने वाहनों की हेडलाइट से आँखें चौंधिया चौंधिया जा रही थी।